ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

सिनेमा की पटकथा का स्वरूप

डॉ. विजय शिंदे
देवगिरी महाविद्यालय, औरंगाबाद - 431005 (महाराष्ट्र).
ब्लॉग - साहित्य और समीक्षा *डॉ. विजय शिंदे*

फिल्मों के व्यावसायिक और कलात्मक नजरिए से सफल होने के लिए आधारभूत तत्त्व के नाते कथा, पटकथा और संवादों को बहुत अधिक एहमीयत है। कथा या कहानी आरंभिक तत्त्व के नाते एक सृजन प्रक्रिया होती है और इसे साहित्यकार द्वारा जाने-अनजाने अंजाम दे दिया जाता है। सृजन कार्य स्वयं के सुख के साथ समाज हित के उद्देश्य को पूरा करता है, परंतु इसका पूरा होना किसी आंतरिक प्रेरणा का फल होता है। लेकिन इन्हीं कहानियों का जब फिल्मी रूपांतर होता है तब उसका मूल फॉर्म पूरी तरीके से बदल जाता है। एक कहानी की पटकथा लिखना और फिर संवाद स्वरूप में उसे ढालना व्यावसायिक नजरिए को ध्यान में रखते हुए की गई कृत्रिम प्रक्रिया है। इसे कृत्रिम प्रक्रिया यहां पर इसलिए कह रहे हैं कि जैसे साहित्यकार कोई रचना अंतर्प्रेरणा से लिखता है वैसी प्रक्रिया पटकथा लेखन में नहीं होती है, उसे जानबूझकर अंजाम तक लेकर जाना पड़ता है। पटकथा लेखक के लिए और एक चुनौती यह होती है कि निमार्ताओं द्वारा बनाई जा रही फिल्में किसी छोटी कहानी पर बनी हो तो भी और किसी बड़े उपन्यास पर बनी हो तो भी उसे चुनिंदा प्रसंगों के साथ एक समान आकार में बनाना होता है, ताकि वह दो या ढाई घंटे की पूरी फिल्म बन सके। अर्थात् पटकथा लेखक का यह कौशल, मेहनत और कलाकारिता है, जिसके बलबूते पर वह पटकथा में पूरा उपन्यास समेट सकता है और किसी छोटी कहानी में कोई भी अतिरिक्त प्रसंग जोड़े बिना उसको पूरी फिल्म बना सकता है। फणीश्वरनाथ रेणु जी की ढाई पन्ने की कहानी 'तीसरी कसम' (मारे गए गुलफाम) पर बनी फिल्म 'तीसरी कसम' (1966) और रणजीत देसाई के उपन्यास 'राजा रविवर्मा' पर बनी फिल्म 'रंगरसिया' (2014) दोनों भी परिपूर्ण है। अर्थात् एक पटकथा का आकार कहानी से बना है और दूसरी पटकथा का आकार व्यापक उपन्यास की धरातल है। इन दोनों में भी साहित्यिक रूप से फिल्म के भीतर का रूपांतर पटकथा लेखक का कमाल माना जा सकता है। आवश्यकता भर लेना और अनावश्यक बातों को टालने का कौशल पटकथा लेखन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। जिस प्रकार पटकथा का लेखन और लेखक का कमाल होता है वैसे ही निर्माता-निर्देशक की परख, पैनापन और चुनाव का भी कमाल होता है। मन्नू भंड़ारी लिखती है कि "बरसों पहले मेरी कहानी 'यहीं सच है' पर बासुदा (बासु चटर्जी) ने फिल्म बनाने का प्रस्ताव रखा तो मुझे तो इसी बात पर आश्चर्य हो रहा था कि एक लड़की के निहायत निजी आंतरिक द्वंद्व पर आधारित यह कहानी (इसीलिए जिसे मैंने भी डायरी फॉर्म में ही लिखा था) दृश्य-माध्यम में कैसे प्रस्तुत की जाएगी भला? पर बासुदा ने इस पर 'रजनीगंधा' (1974) नाम से फिल्म बनाई, जो बहुत लोकप्रिय ही नहीं हुई, बल्कि सिल्वर जुबली मनाकर जिसने कई पुरस्कार भी प्राप्त किए।" *(कथा-पटकथा, पृ. 9)*

1. पटकथा क्या है?

प्रस्तावना में लिख चुके हैं कि पटकथा फिल्मों के लिए आधारभूत तत्त्व है। कहानी का फिल्मी ढांचे के तहत विकसित रूप पटकथा कहा जाता है। पटकथा लेखक वह पहला व्यक्ति होता है जो फिल्म को परदे पर उतरने से पहले देखता है। अपनी कल्पना की आंख से उसके सामने से कई

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

अदृश्य चित्र सरकने लगते हैं और उसे वह संक्षेप में कागज पर उतारता है। उन्हीं उतरे हुए शब्दों को एक कहानी के तहत फिल्मों से जुड़े अन्य लोगों के सामने बयां करते भी जाता है तब वे अन्य लोग भी पटकथा लेखक के कथन कौशल के आधार पर फिल्म की आरंभिक अवस्था की सही झलक पाते हैं। पटकथा लेखक के दिमाग में कहानी के दृश्य एक क्रम से मानो चलचित्र जैसे चलने लगते हैं। इन्हीं दृश्यों को पटकथा लेखक शब्दों में पकड़ता है और कागज पर उतारते जाता है। इस प्रकार से कागज पर पटकथा को उतारना आसान नहीं होता उसके लिए कल्पना, प्रतिभा, तपस्या, मेहनत और कौशल की जरूरत होती है। इस प्रकार का लेखन अचानक नहीं होता इसके लिए इस क्षेत्र से जुड़े रहना और अभ्यस्त होना भी जरूरी होता है।

पटकथा अंग्रेजी शब्द 'स्क्रीन प्ले' का अनुवाद है। फिल्मों में और दूरदर्शन पर कई प्रकार के कथात्मक कार्यक्रम बनाए जाते हैं और इसको बनाते वक्त उसके आरंभ, मध्य और अंत की रूपरेखा बनाई जाती है। यह कल्पना की जाती है कि फिल्म बनने के बाद परदे पर किस रूप में उभरेगी और मूल कथा को कैसे प्रकट करेगी। अर्थात् फिल्मों में भूतकाल में चलती मूल कहानी को वर्तमान के साथ जोड़ने का कार्य पटकथा लेखन करता है।

- **असगर वजाहत -** "पटकथा, कथा का वह रूप है जिसके आधार पर निर्देशक बनाए जानेवाली फिल्म के भावी स्वरूप का अनुमान लगाता है।" *(पटकथा लेखन व्यावहारिक निर्देशिका, पृ. 9)*

- **मनोहर श्याम जोशी -** "आप पहले अपने मन के पर्दे पर घटनाओं को होते हुए देखिए और पात्रों को बोलते हुए सुनिए। फिर कागज पर उतारते जाइए कि क्या घटना घट रही है और कौन पात्र क्या बोल रहा है? घटना की नाटकीयता को उभारते जाइए। यह मानकर चलिए कि जैसा नानी से कहानी सुनता बच्चा हर दिलचस्प मोड़ के बाद यह पूछता है कि फिर क्या हुआ, उसी तरह बहुत-से जिज्ञासु दर्शक बैठे हैं जो आपसे जानना चाहते हैं कि 'फिर क्या होता है?' इस प्रश्न का जवाब देते रहने से नए-नए सीक्वेंस शुरू होंगे और ये सीक्वेंस आपका 'स्क्रीन प्ले' यानी आपकी पटकथा तैयार कर देंगे। गोया पटकथा और कुछ नहीं वह कथा है जो पर्दे पर दिखाई जाने के लिए लिखी गई है।" *(पटकथा लेखन एक परिचय, पृ. 20)*

- **हूबनाथ -** "कथा और पटकथा मात्र दो ऐसे तत्त्व हैं जो यंत्र के मोहताज नहीं है। कथा, विचारबीज के रूप में जनमती है और पटकथा जिसे चित्रनाट्य भी कहते हैं उस विचारबीज का मुकम्मल ढांचा रचती है।" *(कथा पटकथा संवाद, पृ. 17)*

- **राजेंद्र पांड़े -** "पटकथा यानी सिनेमा, टेलीविजन तथा वृत्तचित्र माध्यम हेतु किया गया विस्तृत लेखन। यह एक अलग शैली का लेखन है, इसलिए इसका नाम भी अलग है, पटकथा लेखन। पटकथा लेखन में कथा-लेखन समाया हुआ है। लेकिन यह कथा लेखन के बाहर के तत्त्वों को भी अपने में समेटे हुए हैं।" *(पटकथा कैसे लिखें, पृ. 9)*

2. पटकथा के लिए कहानी कैसी हो?

फिल्मों की सफलता और असफलता कहानी और पटकथा पर निर्भर होती है। अतः निर्माताओं द्वारा कहानी का सही चुनाव होना भी अत्यंत आवश्यक है। उनका यह चुनाव गलत हो गया तो आगे चलकर उनके लिए आर्थिक नुकसान की ओर ले जा सकता है। उनका यह नुकसान केवल उनका नहीं

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

रहता है, तो उस फिल्म से जुड़े हर शख्स के लिए होता है। "कहानी फिल्म का मूल आधार बनती है और कहानी 'अच्छी' या 'खराब' होने से फिल्म की सफलता और असफलता तय होती है। चूंकी फिल्म और टी. वी. बहुत महंगे माध्यम है इसलिए इसके व्यावसायिक पक्ष का ध्यान रखना भी जरूरी होता है। कहानी चुनते समय यह सोचना बहुत आवश्यक है कि कहानी फिल्म के लिए क्यों चुनी जा रही है? क्या कहानी दर्शकों को पसंद आएगी?" *(पटकथा लेखन व्यावहारिक निर्देशिका, पृ. 16)* कहानी में आरंभ से लेकर अंत तक का सफर बड़ी बारीकी से सजाया हुआ होना चाहिए। उसमें अनावश्यक विस्तार और घटना प्रसंग जुड़े हैं तो पटकथा लिखते वक्त उसे परहेज करना पड़ता है। छोटी कहानी पर बनी फिल्में कम तकलीफ देती है, परंतु बड़े उपन्यास और कहानियों पर बनी फिल्मों पर बहुत अधिक काम करते हुए व्यापक परिदृश्य को फिल्म के हिसाब से छोटा करना अत्यंत जरूरी होता है। पटकथा के लिए कहानी का चुनाव करते वक्त निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें -

- कहानी में मनोरंजन के तत्त्व होने चाहिए।
- मौलिकता कहानी की अनिवार्य शर्त है।
- कहानी के कथानक का सीधा, स्वाभाविक होना आवश्यक है।
- कहानी का प्रासंगिक होना जरूरी है।
- कहानी के तत्त्वों में संतुलन होना चाहिए।
- पात्रों की संख्या संतुलित और कथानक के अनुसार हो।
- कहानी में अत्यधिक घटनाएं, उलझी हुई उपकथाएं नहीं होनी चाहिए।
- पात्रों और घटनाओं के बीच संतुलन होना चाहिए।
- कहानी में द्वंद्व आवश्यक है। आंतरिक द्वंद्व और बाह्य द्वंद्व का संयोजन आवश्यक है।
- कहानी का परिवेश स्पष्ट हो।
- कहानी में स्पष्ट चरम उत्कर्ष हो।
- मुख्य कथा और उसकी उपकथाओं के बीच एक गहरा संबंध होना चाहिए।
- कहानी में किसी विचारधारा, पात्र या समस्या के प्रति अनावश्यक मोह नहीं होना चाहिए।
- कहानी का काम उपदेश देना नहीं है।

3. पटकथा का स्वरूप

कहानी और सिनेमा की पटकथा में जमीन-आसमान का अंतर होता है। सिनेमा की पटकथा लिखते वक्त लेखक को सिनेमाई जानकारी आवश्यक है। फिल्में बनती कैसी है और उसका उद्देश्य क्या है, यह भी जानना जरूरी है। फिल्में बनाने के तरीकें और उसके तकनीक की बारिकियों पर भी पटकथा लेखक को गौर करना पड़ता है। अगर यह पता नहीं है तो पटकथा लेखक से कई गलतियां होगी और गलतियों के साथ बनी फिल्में व्यावसायिकता की कसौटी पर सबका नुकसान करेगी। अब निर्माता-निर्देशक व्यावसायिक नफे-नुकसान के बारे में सोचने लगे हैं। प्रत्येक फिल्म उनके लिए कमाई का जरिया होता है। बहुत अधिक नफा नहीं परंतु नुकसान तो बिल्कुल उठाएंगे नहीं जैसी मानसिकता हर फिल्मी शख्स की है और यह गलत भी नहीं है। पटकथा लेखक और लेखन फिल्मों के लिए आरंभिक सीढ़ी है और इस सीढ़ी का अतुलनीय, तराशा हुआ तथा ताकतवर होना जरूरी है; अगर यह नहीं है तो पटकथा का कोई मोल नहीं और पटकथा लेखक का भी कोई मोल नहीं। ऐसे कई उदाहरण हिंदी और अन्य भारतीय तथा विश्व भाषाओं की फिल्मी दुनिया में देखें जा सकते हैं कि जो एक साहित्यकार के नाते सातवें आसमान पर चढ़े लेकिन एक पटकथा लेखक के नाते धराशायी हो गए।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

हिंदी साहित्यकार और कथाकार के नाते मुंशी प्रेमचंद, भगवतीचरण वर्मा, सुदर्शन, जैनेंद्र कुमार जैसों के नाम बहुत बड़े नाम हैं परंतु यहीं जब फिल्मों के साथ जुड़ते हैं और पटकथा लिखने लगते हैं तो उसके फॉर्म और तकनीक के आदी नहीं होते तो असफल होते हैं। अंततः इन बड़े लेखकों को फिल्मी दुनिया से निराशा होती है और वापस लौटते हैं। राही मासूम रजा, कमलेश्वर जैसे लेखक फिल्मी दुनिया की तकनीक से आदी हो गए तो उन्होंने सफलता पाई। "पटकथा अथवा स्क्रिप्ट लेखन कार्य आम लेखन से बिल्कुल दूसरी तरह का लेखन कार्य है, जिसे दृश्यों के आधार पर लिखा जाता है, वह व्यक्ति उतना ही अधिक सफल पटकथा लेखक होता है, जिसे लेखन के साथ-साथ निर्देशन, संपादन और छायांकन का भी अनुभव हो। इसलिए यह आवश्यक है कि सफल पटकथा लेखक बनने हेतु निर्देशन, संपादन और छायांकन का कुछ-न-कुछ अनुभव होना चाहिए।" *(पटकथा लेखन फीचर फिल्म, पृ. 12)* पटकथा के स्वरूप की जानकारी लेते वक्त निम्न बातों पर गौर करना जरूरी है -

- पटकथा लेखन का सही स्वरूप तो वही होगा, जो दृश्य-श्रव्य के अनुकूल हो।
- पटकथा प्रभावकारी होती है, उसके प्रभाव से दर्शक, पाठक और श्रोता के पास पहुंचना होता है।
- पटकथा लेखक द्वारा पटकथा को कागज पर लिखा जाता है परंतु उसका माध्यम बदलने से मतलब फिल्मी बनने से अधिक प्रभाव निखरता है। अर्थात् अधिक प्रभाव निखारनेवाली पटकथा का होना जरूरी है।
- यह जरूरी नहीं है कि पटकथा कहानी की पूरी प्रतिछाया हो। लेखक कहानी के किसी ऐसे बिंदु से भी पटकथा शुरू कर सकता है जो कहानी का प्रारंभिक बिंदु न हो।
- पटकथा लेखन फिल्म की गति, रोचकता और नाटकीयता तथा चरित्र विकास को ध्यान में रखकर होना चाहिए।
- पटकथा लेखक कहानी को दृश्यात्मक रूप में देखता है और कहानी के जो प्रसंग किसी खास तरह के 'विजुवल' की मांग करते हैं उन्हें पूरा करता है।
- पटकथा कहानी को उस रूप में प्रस्तुत करती है जिस रूप में वह पर्दे पर दिखाई देगी।
- यह जरूरी नहीं कि कहानी के क्रम से ही पटकथा लिखी जाए।
- कहानी की प्रत्येक घटना एक निश्चित स्थान पर निश्चित समय में घटीत होती है। अतः एक स्थान और एक समय पर घटनेवाली घटना से दृश्य बनता है।
- पटकथा लेखन में छोटी और बड़ी घटनाओं को स्थान और समय के आधार पर सूचिबद्ध किया जाता है।
- कहानी में किसी घटना का स्थान या समय बदल जाने से पटकथा के भी दृश्य बदल जाते हैं।
- कहानी छोटी-बड़ी घटनाओं का एक संकलन होती है। समय और स्थान के आधार पर सीन (दृश्य) बनते हैं। एक फीचर फिल्म की कहानी में प्रायः 100 से 150 सीन होते हैं। पटकथा लेखक दृश्यों को आपस मे जोड़ने के लिए कुछ ऐसे दृश्यों की कल्पना करता है, जो सब सीन (उपदृश्य) कहे जाते हैं। इन उपदृश्यों में दो-चार ही शॉट्स होते हैं, लेकिन इससे दृश्य को स्थापित किए जाने में मदद मिलती है।

कुलमिलाकर कहा जा सकता है कि पटकथा लेखन ही फिल्मों के लिए सफलता की सीढ़ी है, जिस पर चढ़कर दर्शकों के मन पर राज किया जा सकता है। कहानी को फिल्मी पटकथा के भीतर ढालना एक विशेष प्रकार की कला है और इस कला को आत्मसात करना एक नई दुनिया का खुल जाना है।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

इस क्षेत्र में अपना भविष्य बनाने के इच्छुक पटकथा की बारिकियों को समझे और अभ्यास तथा अनुभव के बल पर नए रोजगार क्षेत्र को खोले।

सारांश

भारत में फिल्म उद्योग और इसीसे जुड़े विविध चॅनल्स पर चलनेवाले धारावाहिक, विज्ञापन तथा तत्सम क्षेत्र की बहुत बड़ी दुनिया है। हॉलीवुड़ की तुलना में ही नहीं तो विश्व के किसी भी फिल्म जगत् की अपेक्षा भारत में सबसे अधिक फिल्में बनती है। यह बात केवल फिल्मों की हो गई, साथ ही विविध भाषाओं और चॅनल्स के चलते धारावाहिक का भी बहुत अधिक प्रचलन है। इन सबके लिए कहानियों की जरूरत होती है। यह कहानियां लिखित रूप में उपलब्ध है तो उसका फिल्मी रूपांतर करने के लिए या धारावाहिक रूपांतर करने के लिए पटकथा लेखक तथा पटकथाओं की आवश्यकता होती है। अर्थात् पटकथा लेखन की कला को अगर अवगत किया तो अपना बाजारमूल्य बढ़ सकता है। पटकथा लेखक एक साहित्यकार और व्यावसायिक भी हो सकता है। उसके भीतर मौजुद सृजक शक्ति व्यावसायिकता के साथ तालमेल बिठाती है और पटकथा लेखन की कला को समझ सकती है। पटकथा कहानी को दृश्य रूप में उतारने की कला है। पटकथा लेखक का लेखन दर्शकों को बांधे रखता है, साथ ही वहीं अगर पढ़ा जा रहा है या सुना जा रहा तो भी उतना ही प्रभावी होता है। पटकथा के अनुकूल कहानी में विविध दृश्य, घटना प्रसंग, विषय का सिलसिलेवार होना, संघर्ष, मसालेदार, कौतुहल बनानेवाला और दर्शकों को बांधे रखनेवाला होना जरूरी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कथा-पटकथा - मन्नू भंड़ारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2004, द्वितीय संस्करण 2014.
2. कथा पटकथा संवाद - हूबनाथ, अनभै प्रकाशन, मुंबई, 2011.
3. पटकथा लेखन एक परिचय - मनोहर श्याम जोशी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000, आवृत्ति 2008.
4. पटकथा कैसे लिखें - राजेंद्र पांड़े, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2006, आवृत्ति 2015.
5. पटकथा लेखन फीचर फिल्म - उमेश राठौर, तक्षशीला प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001, द्वितीय संस्करण 2005.
6. पटकथा लेखन व्यावहारिक निर्देशिका - असगर वजाहत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, छात्र संस्करण 2015.
7. मानक विशाल हिंदी शब्दकोश (हिंदी-हिंदी) - (सं.) डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री, अशोक प्रकाशन, दिल्ली, परिवर्द्धित संस्करण, 2001.

■■■